Lecture No - (02)

Name of the college - APSM College, Barauni, Begusarai
Name — Dr. Bharti Kumari (G.T)
Deptt - A.I.H.&C
Lession/plan for class - B.A. AIH&C(H), part-1, paper-1
Date - — 29-04-2021
Name of the topic — Chola Administration system

चोल शासन व्यवस्था -(Chola administration system)

वी.ए. स्मिथ के मतानुसार "— चोल राज्य का शासन प्रबंध यद्यपि बहुत प्राचीन काल में संगठित हुआ था, परन्तु फिर भी बहुत सुव्यवस्थित था।" अनेक अभिलेखों से चोल राज्य - प्रबंध के विषय में पर्याप्त सामग्री प्राप्त होती है।

(1) केन्द्रीय शासन
(2) लोकप्रिय अतिम्बलियाँ
(3) प्रान्तीय प्रबंध
(4) स्थानीय स्वशासन
(5) न्यायांयिक स्वशासन
(6) आय एवं व्यय
(7) थल एवं जल सेनाए।

(1) केन्द्रीय शासन - Central Administration)

देश का सबसे बड़ा अधिकारी राजा ही था। देश के प्रबंधन को राजा, मंत्री, और कई अन्य प्रमुख अधिकारी अपनी सहयोग से चलाते थे।
— "राज्य का सम्पूर्ण ढाँचा सम्राट पर केन्द्रित था।" राजकीय वंश ही अधिकार व्यवस्थाओं को नियत करता था। राजा अपनी प्रजा

PTO

का सेवक होता था । प्रजा अपने चोल शासकों की प्रतिमाएँ मंदिरों में स्थापित कर उनकी पूजा करते थे।

(2) लोकप्रिय असेम्बलियाँ - (Popular Assemblies)

चोल राज्य प्रबंध में प्रजातंत्र का का भी एक विशेष रूप था । राज्य का सम्पूर्ण महत्वपूर्ण कार्य परिषदों द्वारा ही सम्पन्न किया जाता था। चोल राज्य की अधिक लोकप्रियता इन परिषदों के कारण ही थी। इन परिषदों को निम्नानुसार वर्णित किया गया था।

(a) नातार → यह परिषद, जिला अथवा नाडुओं की होती थी, एवं जिले में उत्पन्न होने वाली सभी समस्याएँ इसी परिषद में सुलझाई जाती थी।

(b) नगरातार → व्यापार और व्यवसाय की उन्नति के लिए नगरों में भिन्न परिषदें होती थी।

(c) उर → प्रत्येक गाँव के आपसी झगड़ों को निपटाने के उद्देश्य से 'उर' नामक परिषदें हुआ करती थी

(d) सभा → ग्रामों में सभा के नाम से ब्राह्मणों की अलग से परिषदें हुआ करती थी । इन परिषदों में ब्राह्मणों की समस्याओं को सुलझाया जाता था।

(3) प्रान्तीय प्रबंध :- (State Level Management)

सम्पूर्ण राज्य छः प्रांतों अथवा मण्डलों में विभाजित था । यह गवर्नरों के अधीन था। गवर्नर प्रायः राजवंश के हुआ करते थे। प्रांतों को जिलों या वलनाडुओं में तथा जिलों को तहसीलों या नाडुओं में विभाजित किया जाता था। प्रत्येक मण्डल अथवा प्रांत एक वायसराय

P.T.O.

के अधीन होता था। वह केन्द्रीय सरकार से पत्र-व्यवहार जैसे कार्य करता रहता था। अनेक छोटे-छोटे अधिकारी उसके कार्यों में सहयोग करने के लिए नियुक्त किये जाते थे।

(4) स्थानीय स्वशासन :-(Local Administration)

गाँव अपना कार्य करने के लिए पूर्ण रूप से स्वतंत्र हुआ करते थे। हर एक भूमि का कार्य एक पंचायत संभालती थी। जिसे सभा कहा जाता था। इस सभा के सदस्यों को लोगों द्वारा स्वयं ही चुना जाता था। तथा ये सदस्य प्रायः एक वर्ष की अवधि तक अपने पद के कार्यभार को संभालते थे। पुलिस पर भी सभा ही नियंत्रण रखती थी। सभा के पास न्यायिक शक्तियाँ भी थी। इन्ही कारणों से चोल शासन-प्रबंध बहुत ही सफल सिद्ध हुआ था।

(5) न्यायात्रिक प्रशासन →(Judicial Administration)

न्याय की सभी व्यवस्थाएँ आधुनिक तरीके से हुआ करती थी। दोनों ही पक्ष अपनी-अपनी बात को कहने के लिए स्वतंत्र होते थे। बाद में गवाह पेश करके सभी बातों को ध्यान में रखते हुए फैसले किये जाते थे।

(6) आय एवं व्यय →(Income and Expenditure)

आय का बहुत बड़ा स्रोत भूमि हुआ करता था। यह सारी उपज का 3 छठा भाग होता था। अकाल एवं बाढ़ जैसे स्थितियों में भूमि कर को माफ कर दिया जाता था। ग्राम समाजों

P.T.O.
29-04-2021

Scanned with CamScanner

द्वारा अग्रज्ञ या धन के रूप में साकार को कर दिया जाता था। उस समय प्रयोग किये जाने वाले सिक्कों को काशु कहा जाता था। जुर्माना, पशुओं, आदि से भी आय होती थी। उपरोक्त प्रकार के साकार के पास आय के कई स्रोत थे। चोल राजाओं द्वारा कावेरी नदी से कई नहरें निकलवायी गई। राजेन्द्र प्रथम के समय गंगकोंड - चोलपुरम् के स्थान पर एक झील को 16 मील तक किनारे बनाए गए, जिससे अधिकतर गरीब किसान लाभ ले सके। चोल राजाओं द्वारा मन्दिरों, तालाबों आदि पर भी अत्यधिक ध्यान दिया गया।

(b) थल एवं जल सेनाएं → (Army and Navy)

चोल शासको द्वारा अपनी सामुद्रायिक सेना की ओर विशेष ध्यान दिया गया। एवं अपने राज्य - विस्तार तथा सुरक्षा की दृष्टि से उन्होंने एक शक्तिशाली सेना रखी हुई थी, जिसके अन्दर पैदल, घुड़सवार एवं जल सेना भी शामिल थी। इनके द्वारा अरब सागर एवं महासागर के कई द्वीपों पर विजय प्राप्त की गई और निकोबार, मलाया, इत्यादि पर भी इनका ही अधिकार हो गया था। दक्षिण के मंदिरों को प्रवेशद्वार कहे जाने के मुख्य रूप से यह है कि लगभग हर दक्षिण राज्य एवं सभी महत्वपूर्ण प्रभाव राजवंश ने मंदिर वास्तुकला में सर्वाधिक रूचि ली, एवं इसमें सर्वाधिक प्रगति की।

(c) चालुक्य और पल्लव एवं मंदिर निर्माण →

यद्यपि चालुक्य एवं पल्लव वंश के राज्यों में युद्ध होता रहता था, फिर भी दोनों P.T.O.

Scanned with CamScanner

ही वंशों के राज्यों में मंदिर के निर्माण कार्य निरन्तर होते रहे। माना जाता है कि पुलकेशियन द्वितीय ने जब पुट्टदकल में मंदिर का निर्माण करवाया था, उसने काँचीपुरम के मंदिर की शैली का अनुसरण किया था। प्रारंभिक चालुक्य मंदिर ऐहोल में 600 ई. के आसपास बने थे।

(2) पल्लव → पल्लव राजा भी महान भवन-निर्माता हुआ करते थे। राजा महेन्द्रवर्मन प्रथम द्वारा अधिकतर मंदिरों का निर्माण चट्टानों को काटकर करवाया गया था। त्रिचनापल्ली की चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफाएँ इस काल की सबसे उत्कृष्ट कृतियों में सम्मिलित हैं।

(3) राष्ट्रकूट → एलोरा की गुफा चट्टानों को काटकर कैलाश मंदिर का निर्माण कृष्ण प्रथम द्वारा करवाया गया था। राष्ट्रकूट वास्तुकला के सुन्दर उदाहरण में एलीफेंटा एवं मालखेड़ा के मन्दिर देखे जा सकते हैं। माना जाता है कि अमोघवर्ष एक सच्चा जैन था एवं उसने कई मंदिरों का निर्माण करवाया था।

(4) चोल → इनके शासनकाल में मंदिर-निर्माण कला अपने चर्मोत्कर्ष तक पहुँच गई थी। राजराजा प्रथम द्वारा तंजौर का बृहदेश्वर मंदिर निर्मित करवाया गया।

भारती कुमारी
29-04-2021